# स्त्रियों की दशा–वैदिक साहित्य के संदर्भ में

**शिवपूजन चौरसिया**

वैदिक काल से लेकर आज तक हमारे लिए शिक्षा का अर्थ वह प्रकाश स्त्रोत है जो जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में हमारा मार्गदर्शन करता है। स्त्रियों को प्राचीन काल से ही शिक्षा का अधिकार था, परन्तु आज स्थिति बहुत अधिक संतोषजनक नहीं है। भारतीय साहित्य तथा संस्कृति के इतिहास में स्त्रियों का आध्यात्मिक स्वरूप विकृत नहीं हुआ है। आज भी स्त्रियां गृहस्वामिनी और अर्द्धांगिनी के रूप में ही मुख्य रूप से दिखाई देती हैं। ऋग्वैदिक काल में स्त्रियों की वैयक्तिक मर्यादा सुरक्षित थी। स्त्रियों को लौकिक एवं पारलौकिक दोनों ही क्षेत्रों में कल्याणकारी रूप में देखा जाता था। स्त्रियों की महत्ता को वैदिक संस्कृत साहित्य में मुक्तकंठ से वर्णित किया गया है। वैदिक वाड्.मय में लक्ष्मी, शक्ति, दुर्गा की श्रेणी में अदिति, इन्द्राणी, उषा, भारती, श्रद्धा आदि को स्थान दिया गया है तथा ये देवियाँ उनके तत्वों की अधिष्ठात्री देवी कही गयी हैं। इसमें सर्वशक्तिशाली अदिति की संतान आकाश, माता–पिता और समस्त देवता हैं।